6

प्रज्ञा-प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

प्रज्ञा-प्रवाह

व्याकरण एवं अभ्यास पुस्तिका

6

प्रकाशक

विद्या भारती उत्तर क्षेत्र

नारायण भवन, गीता निकेतन परिसर, सलारपुर रोड़,
कुरुक्षेत्र-136118 01744-259941
: vbukprakashan@gmail.com, vbukkkr@yahoo.co.in : vbukprakashan.com

प्रकाशक एवं वितरक

Vidya Bharti Uttar Kshetar

Narayan Bhawan, Gita Niketan Parisar, Salarpur Road, Kurukshetra-136118

01744-259941 : vbukprakashan@gmail.com, vbukkkr@yahoo.co.in : vbukprakashan.com

वितरण-केन्द्र

भारतीय शिक्षा समिति, जम्मू कश्मीर प्रदेश

भारतीय विद्या मंदिर परिसर, अम्बफला, वेद मंदिर, जम्मू-180 005
दूरभाष : 0191-2547953
E-mail: bssjk08@gmail.com
E-mail: bssjmu2006@yahoo.com

सर्वहितकारी शिक्षा समिति, पंजाब

विद्या धाम, गुरु गोबिन्द सिंह एवेन्यू,
नजदीक टेलीफोन एक्सचेंज, जालन्धर-144 009
दूरभाष : 0181-2421199, 2420876
E-mail: ses.jld@gmail.com

हिमाचल शिक्षा समिति, शिमला

सरस्वती विद्या मन्दिर, हिम रश्मि परिसर, विकास नगर,
शिमला-171 009, दूरभाष : 0177-2620813, 2620814
E-mail: himachalshikshasamitishimla@gmail.com
E-mail: shikshasamiti@sancharnet.in

हिन्दू शिक्षा समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,
लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)
दूरभाष : 01744-270241, 9996542500
E-mail: hsskkr@yahoo.co.in

ग्रामीण शिक्षा विकास समिति, हरियाणा

संस्कृति भवन, गीता निकेतन आवासीय विद्यालय परिसर,
लाजपत राय मार्ग, कुरुक्षेत्र-136118 (हरियाणा)
दूरभाष : 01744-270241, 9996542500
E-mail: gsvskkr@yahoo.co.in

हिन्दू शिक्षा समिति-दिल्ली

डी.ए.वी.व.मा. विद्यालय क्र. 2, शंकर नगर, दिल्ली-110 051
दूरभाष : 011-22008542
E-mail: hindushikshasamiti@gmail.com

हिन्दू शिक्षा समिति, न्यास

गीता बाल भारती परिसर, राजगढ़ कॉलोनी,
दिल्ली-110 031
दूरभाष : 011-22002957
E-mail: hssn2604@gmail.com

समर्थ शिक्षा समिति

सरस्वती शिशु/बाल मन्दिर परिसर, आरामबाग,
डेसू कार्यालय के पास, पहाडगंज, नई दिल्ली-110055
दूरभाष : 011-23631216, 23631247
E-mail: samiti59@yahoo.com

प्रथम संस्करण : 2020

वैधानिक चेतावनी: यह पुस्तक विद्या भारती उत्तर क्षेत्र द्वारा प्रकाशित है। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग सर्वाधिकार सुरक्षित है।

लेखक मण्डल

सुभाष शर्मा
M.A., B.Ed.
प्रान्त सह सेवा शिक्षा प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

राम कुमार
M.A., L.T., B.Ed.
प्रान्त प्रशिक्षण प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

शेषपाल सिंह
M.A., B.Ed.
प्रान्त शैक्षिक प्रमुख
विद्या भारती हरियाणा

राजेश कुमार
M.A., L.T., B.Ed.
सैक्टर 40, चण्डीगढ़

Printed By :
Bulbul Printing Press, Plot No. 1831, Deep Complex, Hallo Majra, Near Power Grid, Chandigarh-160002

प्रस्तावना

'प्रज्ञा प्रवाह' व्याकरण एवम् अभ्यास पुस्तिका भाग-6 के अध्ययन एवम् प्रायोगिक क्रियाओं के माध्यम से विद्यार्थी व्याकरण को सहजता व सरलता से सीखने में सक्षम होंगे। व्याकरण के प्रयोग से भाषा सीखने और समझने से विद्यार्थियों का स्वतन्त्र चिन्तन भी विकसित होगा तथा भाषा का रचनात्मक प्रयोग भी बढ़ेगा। पुस्तक केवल परीक्षा आधारित न होकर व्यावहारिक व नैतिक मूल्य आधारित बने तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (N.C.E.R.T.) के मानकों के अनुरूप बनकर विद्यार्थी के सभी कौशलों में वृद्धि करे, ऐसा एक सद्प्रयास है।

विद्यार्थी की कल्पना शक्ति एवम् सृजनात्मकता का विकास सहज रूप में हो, इस दृष्टि से भाषा सरल, स्पष्ट और सुबोध बने, इसका विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। अध्ययन व अध्यापन में रुचि बने, इसलिए मनोभाव जागरण हेतु चित्रों का यथा स्थान प्रयोग किया गया है। पाठ्य सामग्री का चयन विद्यार्थियों की आयु व ग्राह्य क्षमता को ध्यान में रखकर किया गया है। शिक्षण-सूत्र व शिक्षण-युक्तियों का भी उचित उपयोग हुआ है।

सभी अध्यायों में तथा उनके अभ्यास में शिक्षणेत्तर गतिविधियों को स्थान दिया गया है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होगा। स्थानीय परिवेश, जीवन शैली के उदाहरण व प्रायोगिक कार्य विद्यार्थी को जीवन मूल्यों से जोड़ेंगे, ऐसा विश्वास है।

लेखन कार्य और वह भी व्याकरण सम्बन्धी, सर्वथा एक कठिन कार्य है। उत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष श्रीमान सुरेन्द्र अत्री जी व हरियाणा प्रान्त के संगठन मन्त्री श्रीमान रवि कुमार जी के मार्गदर्शन में यह कार्य संभव हो पाया। इसके अतिरिक्त डॉ कुलदीप कुमार एवं जिन बंधु-भगिनियों का सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सभी के प्रति भी लेखक मण्डल आभार व्यक्त करता है।

आपके बहुमूल्य सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी तथा हृदय से स्वागत भी।

लेखक मण्डल

अनुक्रमणिका

क्रं०	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01.	भाषा, बोली, लिपि और व्याकरण	05
02.	वर्ण-विचार	09
03.	संधि	13
04.	शब्द-विचार	17
05.	शब्द भण्डार 'विलोम व पर्यायवाची'	22
	अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	23
	अनेकार्थी शब्द	24
	समरूपी भिन्नार्थक शब्द	25
06.	शब्द रचना 'उपसर्ग व प्रत्यय'	26
07.	शब्द रचना 'समास'	29
08.	संज्ञा	33
09.	लिंग	36
10.	वचन	40
11.	कारक	43
12.	सर्वनाम	46
13.	विशेषण	50
14	क्रिया	54
15.	काल	57
16.	अविकारी शब्द	61
17.	विराम चिह्न	65
18.	वाक्य-विचार	69
19.	मुहावरे व लोकोक्तियाँ	73
20.	सूचना लेखन	77
21.	चित्र लेखन	78
22.	अपठित गद्यांश	81
23.	अपठित पद्यांश	83
24.	संवाद लेखन	85
25.	निबन्ध लेखन	86
26.	पत्र लेखन	90
27.	सुलेख	93

भाषा, व्याकरण, लिपि और बोली

पाठ 1

भाषा : मानव ईश्वर की सबसे उत्तम रचना है। मानव के मन में अनेक प्रकार के विचार आते रहते हैं; किन्तु उस व्यक्ति के अतिरिक्त उसके मन के विचारों को कोई नहीं जानता। वह किसी न किसी प्रकार अपने मन की बात सामने वाले को बताता है। उसकी यह कला भाषा कहलाती है।

सबसे पहले मानव ने संकेतों से अपनी बात कहना आरंभ किया। उसके बाद वह ध्वनि (बोलकर) के द्वारा अपनी बात कहने लगा। जैसे - जैसे मानव सभ्यता विकसित होती गई, उसने लिखकर अपने विचारों को प्रकट करना प्रारंभ कर दिया।

भाषा की परिभाषा- भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भावों, विचारों को बोलकर या लिखकर प्रकट करता है तथा दूसरों के भावों तथा विचारों को समझता है।

भाषा के भेद - भाषा के तीन भेद होते हैं।

1. **सांकेतिक भाषा** - संकेत से अपनी बात बताना। **जैसे** - खेल के मैदान में निर्णायक का हाथों अथवा सीटी से निर्णय देना। यातायात नियन्त्रण के लिए सिपाही का हाथों से संकेत करना। सफेद ध्वज दिखाकर लड़ाई रोकने का संकेत करना। आँखों से संकेत करना, शरीर की भाव-भंगिमा द्वारा संकेत करना।
2. **मौखिक भाषा** - जब व्यक्ति बोलकर अपने विचार प्रकट करता है तो वह मौखिक भाषा कहलाती है। **जैसे** - केशव ने मोहन से पूछा - 'भैया आज कहाँ जा रहे हो? मोहन ने उत्तर दिया, -'भैया मैं आज कुरुक्षेत्र जा रहा हूँ।

   उपरोक्त वाक्यों में दो व्यक्तियों ने बोलकर अपनी बात कही है।
3. **लिखित भाषा** - जब व्यक्ति अपनी बात लिखकर दूसरों तक पहुँचाता है तो इसे लिखित भाषा कहते हैं। **जैसे** - पुत्र ने पत्र लिखकर पिता को अपनी बात कही। अटल जी ने कविता लिखकर अपनी बात कही।

   आलोक - सांकेतिक भाषा में हर व्यक्ति अपनी बुद्धि के अनुसार संकेत समझता है तो सबके अनुमान भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। अत: सांकेतिक भाषा को अधिक मान्यता नहीं मिल सकी।

मातृभाषा - हम जिस परिवेश में रहते हैं, वह हमारे विकास में सहायक होता है। **अपने माता-पिता व परिवार से जो भाषा हम सीखते हैं, वह हमारी मातृभाषा कहलाती है। जैसे** -

गुजरात में गुजराती	पंजाब में पंजाबी
महाराष्ट्र में मराठी	हरियाणा में हिन्दी
गोवा में कोंकणी	जम्मू - कश्मीर में डोगरी, हिन्दी
आन्ध्र प्रदेश में तेलुगू	दिल्ली में हिन्दी
कर्नाटक में कन्नड़	हिमाचल में हिन्दी

राजभाषा - हमारा भारतवर्ष विशाल व विविधताओं से भरा देश है। यहाँ के संविधान में कुछ राज-काज की भाषाएँ हैं। **जो भाषाएँ शासन-प्रशासन व न्यायालयों में प्रयोग होती हैं, इन्हें राजभाषा कहते हैं।** इनकी संख्या 22 है।

आलोक : भारतीय मुद्रा (₹) के सभी नोटों पर कुछ भाषाएँ देखी जा सकती हैं। इसी प्रकार नीचे कुछ देशों की भाषाएँ हैं, इन्हें ध्यान से पढ़ें।

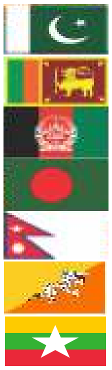

पाकिस्तान	उर्दू
श्रीलंका	तमिल व सिंहली
अफगानिस्तान	अफगानी
बांग्लादेश	बांग्ला या बाङ्ला
नेपाल	नेपाली
भूटान	जोङखा
म्याँमार	बर्मी

आलोक : ऊपर वर्णित सभी देश पहले कभी न कभी भारतवर्ष का ही भाग रहे हैं।

(ख) **व्याकरण** – जहाँ व्यवस्थाएँ ठीक होती हैं, वहाँ शुद्धता रहती है। मनुष्य भी कुछ नियम बनाकर अपने जीवन को व्यवस्थित करता है। ऐसे ही भाषा भी व्यवस्थित होनी चाहिए। भाषा में ध्वनियाँ व शब्द व्यवस्था के अंतर्गत नियमों में बँधे होते हैं। नियमों का यह बन्धन भाषा को शुद्ध बनाता है, यही व्याकरण है। अर्थात् **वह साधन जिससे भाषा के शुद्ध रूप का ज्ञान हो, उसे व्याकरण कहते हैं।**

शुद्ध भाषा का अपना विशेष महत्त्व होता है। भाषा यदि अशुद्ध हो, तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। भाषा की शुद्धता में मुख्यत: तीन व्यवस्थाएँ होती हैं।

1. **वर्ण व्यवस्था**
2. **शब्द व्यवस्था**
3. **वाक्य व्यवस्था**

वर्ण व्यवस्था – इसमें वर्णों के आकार, उच्चारण, वर्गीकरण तथा उनके संयोग व संधि के नियमों पर विचार किया जाता है।

शब्द व्यवस्था – इसमें शब्दों की उत्पत्ति, विकास, निर्माण, अर्थ व भेद पर विचार किया जाता है।

वाक्य व्यवस्था – इसके अन्तर्गत वाक्यों की रचना, उनके भेद, उपभेद, आपसी सम्बन्ध, रूपान्तरण व विराम चिह्नों पर विचार किया जाता है।

इन सभी व्यवस्थाओं के अन्तर्गत किसी भी भाषा के सही स्वरूप को मानक रूप देकर समाज के अनुकूल व स्थायित्व प्रदान किया जाता है।

आलोक – भाषा को शुद्ध बोलना, पढ़ना व लिखना व्याकरण ही सिखाती है।

(ग) **लिपि** – किसी भी भाषा के मौखिक स्वरूप को लिखित रूप में प्रकट करने के लिए कुछ चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। ये चिह्न भाषा की ध्वनियों को दर्शाते हैं। भाषा के लिखने का काम इनके बिना नहीं हो सकता। **लेखन में प्रयुक्त चिह्न लिपि कहलाते हैं। अत: लिखने की विधि ही लिपि कहलाती है।** हिन्दी, संस्कृत, नेपाली, मैथिली, भोजपुरी, मराठी आदि भाषाओं की लिपि देवनागरी है। जिस प्रकार संस्कृत भाषा को सभी भाषाओं की जननी माना जाता है, उसी प्रकार देवनागरी भी अनेक भाषाओं की लिपि है।

नीचे कुछ भाषाएँ व उनकी लिपियाँ दी गई हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें।

भाषा	लिपि	भाषा	लिपि
हिन्दी, संस्कृत	देवनागरी	हिन्दी	देवनागरी

मराठी	देवनागरी	नेपाली	देवनागरी
भाषा	**लिपि**	**भाषा**	**लिपि**
कोंकणी	देवनागरी	पंजाबी	गुरुमुखी
उर्दू	फारसी	जर्मन	रोमन
अंग्रेज़ी	रोमन		

(घ) बोली : भारत एक महान व विशाल देश है। इसकी विशेषता इसकी विविधताओं में ही है। इसमें अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं। भाषाओं को भी लोग अपने-अपने क्षेत्र में अलग-अलग स्वरूपों में बोलते हैं। इनमें कुछ स्थानीय शब्द भी मिल जाते हैं तथा ये शब्द कुछ दूरी पर बदलते रहते हैं। इन स्थानीय शब्दों का प्रभाव व उपयोग भी सीमित क्षेत्र में होता है। **भाषा के आंचलिक रूप को बोली कहते हैं।**

"कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।"

अर्थात् थोड़ी-थोड़ी दूर पर बोली और पानी बदल जाते हैं।

एक ही राज्य में एक भाषा होते हुए भी अनेक बोलियाँ हो सकती हैं।

भारत में बोली जाने वाली कुछ बोलियाँ निम्नलिखित हैं –

हरियाणवी, राजस्थानी, अवधी, ब्रज, बुन्देलखण्डी, कन्नौजी, भोजपुरी, मैथिली, मेवाती, मालवी, जयपुरी, कुमाऊँनी, गढ़वाली आदि।

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(क) ईश्वर की सबसे उत्तम रचना क्या है?

....

(ख) सबसे पहले मानव अपनी बात कैसे बताता या प्रकट करता था?

....

(ग) भाषा किसे कहते हैं? इसके भेद बताएँ।

....

(घ) भारत के संविधान में कितनी भाषाओं को राजभाषा का स्थान प्राप्त है?

....

(ङ) व्याकरण की परिभाषा लिखिए।

....

(च) लिपि किसे कहते हैं?

....

(छ) बोली किसे कहते हैं?

....

(ज) मातृभाषा व राजभाषा की परिभाषा बताएँ।

....

....

2. रिक्त स्थान भरिए-

(क) मानव के मन में अनेक प्रकार के .... प्रकट होते रहते हैं।

(ख) अटल जी ने .... लिखकर अपने मन की बात कही।

(ग) परिवार से जो भाषा सीखते हैं उसे .... कहते हैं।

(घ) जहाँ व्यवस्थाएँ ठीक होती हैं, वहाँ.............. रहती है।

(ङ) देवनागरी अनेक .... की लिपि है।

3. नीचे लिखे गए प्रदेश के सामने उसकी सही भाषा का चयन करें।

(क)	गुजरात	कन्नड़
(ख)	हरियाणा	पंजाबी
(ग)	पंजाब	गुजराती
(घ)	कर्नाटक	हिन्दी
(ङ)	महाराष्ट्र	कोंकणी
(च)	गोवा	मराठी

4. निम्नलिखित भाषाओं की लिपि उसके सामने रिक्त स्थान में लिखिए-

(क)	हिन्दी	....
(ख)	उर्दू	....
(ग)	पंजाबी	....
(घ)	अंग्रेज़ी	....

छात्रों के लिए करणीय

प्यारे छात्रों! आप छुट्टियों में अपने मामा, मौसी, बुआ आदि के घर जाते ही होंगे। वहाँ के रहन-सहन, खान-पान और भाषा-बोली में क्या-क्या अन्तर हैं? उन्हे देखें, समझें और अपने माता-पिता और शिक्षक से इस अन्तर के कारणों को समझें।

आचार्यों के लिए करणीय

आचार्य बंधु/भगिनी छात्रों को भाषा, बोली के बारे में विस्तार से बताएँ।

वर्ण विचार

पाठ 2

हम पहले अध्याय में पढ़ चुके हैं कि लिखित रूप में भाषा अधिक प्रभावी व सुरक्षित है। ध्वनियों को लिखित रूप में रखने के लिए सबसे उपयुक्त इकाई वर्ण है। ऐसी ध्वनि जिसके खण्ड न हो सकें, उसे वर्ण कहते हैं। वर्ण खण्डित नहीं हो सकता। अक्षर (जिसका क्षरण न हो) ऐसी ध्वनि या ध्वनिसमूह है जिसे एक साँस में बोला जाए, यह वर्ण है। **वर्णों का एक समूह होता है तथा इनका एक निश्चित क्रम भी होता है, जिसे वर्णमाला कहते हैं।**

इस वर्णमाला के दो मुख्य भाग हैं –

(1) **स्वर** (2) **व्यञ्जन**

(क) स्वर – ये ध्वनियाँ बिना किसी अवरोध के व स्वतन्त्र रूप से बोली जाती हैं। इन्हें बोलते समय दूसरे वर्ण की सहायता की आवश्यकता नहीं होती। इन्हें स्वर कहते हैं। इनकी संख्या 11 है।

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

स्वर के तीन भेद होते हैं।

1. **ह्रस्व स्वर** – जिन स्वरों के बोलने में सबसे कम समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। **जैसे** – अ, इ, उ, ऋ।
2. **दीर्घ स्वर:** ये वे स्वर हैं, जिनके बोलने में ह्रस्व स्वर से दोगुना समय लगता है, इन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। **जैसे** – आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।
3. **प्लुत् स्वर :** प्लुत् स्वर अलग से कोई स्वर नहीं है। जब स्वरों का उच्चारण लम्बा किया जाता है तब वे प्लुत् स्वर कहलाते हैं। **जैसे** – ओ३म, रा३म, आदि।

इनके अतिरिक्त दो वर्ण हैं जो स्वर व व्यञ्जन दोनों की श्रेणी में नहीं आते, इन्हें अयोगवाह कहते हैं। **जैसे** – अं, अः।

अं – इसके उच्चारण में नासिका से हवा निकलती है। ये अनुस्वार है **जैसे** – हंस, चंचल, पंथ। इसका प्रयोग प्राय: व्यञ्जन के साथ ही होता है।

अः – इसका चिह्न विसर्ग (:) है तथा उच्चारण 'ह' के जैसा प्रतीत होता है। यह स्वर के बाद लगता है। इसे विसर्ग कहते हैं। **जैसे** – अतः, प्रातः, पुन: आदि।

विशेष: अनुनासिक– जिसके उच्चारण करते समय नाक व मुँह दोनों से हवा निकलती है, उसे अनुनासिक कहते हैं। **जैसे** – आँख, गाँव, कुँआ आदि।

(ख) व्यञ्जन : स्वरों की सहायता से बोली जाने वाली ध्वनियों को व्यञ्जन कहते हैं। ये स्वतन्त्र रूप से नहीं बोले जा सकते। हिन्दी वर्णमाला में इनकी संख्या 33 है। ये क्रमश: इस प्रकार हैं।

क, ख, ग, घ, ङ	क वर्ग
च, छ, ज, झ, ञ	च वर्ग
ट, ठ, ड, ढ, ण	ट वर्ग
त, थ, द, ध, न	त वर्ग
प, फ, ब, भ, म	प वर्ग

य, र, ल, व	अन्तस्थ व्यञ्जन
श, ष, स, ह	उष्म व्यञ्जन

स्पर्श व्यञ्जन – पूर्वोक्त व्यञ्जन वर्णों में कुछ व्यञ्जन वर्ण ऐसे हैं जिनका उच्चारण करते समय जिह्वा मुख के विभिन्न स्थानों को छूती है। इन्हें स्पर्श व्यञ्जन कहते हैं। इनके पाँच वर्ग तथा संख्या 25 है।

वर्ग	वर्ण	उच्चारण स्थान	नाम
क वर्ग	क, ख, ग, घ, ङ	कंठ	कंठ्य
च वर्ग	च, छ, ज, झ, ञ	तालु	तालव्य
ट वर्ग	ट, ठ, ड, ढ, ण	मूर्धा	मूर्धन्य
त वर्ग	त, थ, द, ध, न	दन्त	दंत्य
प वर्ग	प, फ, ब, भ, म	ओष्ठ	ओष्ठ्य

विशेष – ड़ व ढ़ भी मूर्धन्य वर्ण माने गए हैं।

अंतस्थ व्यञ्जन – ऐसे वर्ण जिनके उच्चारण में जिह्वा विशेष सक्रिय नहीं होती, उन्हें अंतस्थ व्यञ्जन कहते हैं। ये चार हैं : य, र, ल, व।

ऊष्म व्यञ्जन – जिनके उच्चारण के समय मुँह से गर्म हवा निकले, ऐसे व्यञ्जन ऊष्म व्यञ्जन कहलाते हैं। ये भी संख्या में चार हैं। श, ष, स, ह।

संयुक्त व्यञ्जन – इनके अतिरिक्त चार संयुक्त व्यञ्जन भी होते हैं। ये दो व्यञ्जन मिलकर एक व्यञ्जन बनाते हैं। **जैसे** –

क् + ष = क्ष	**दीक्षा, रक्षक, क्षरण, क्षार।**
त् + र = त्र	**शस्त्र, चित्रकला, मित्रता, गोत्र।**
ज् + ञ = ज्ञ	**यज्ञशाला, ज्ञानी, आज्ञाकारी, विज्ञान।**
श् + र = श्र	**श्रमिक, श्रीमती, श्रवण, श्रद्धा।**

आलोक – संयुक्त व्यञ्जनों में पहला व्यञ्जन स्वर रहित व दूसरा स्वर सहित होता है।

द्वित्व व्यञ्जन – ऐसे कुछ व्यञ्जन जब समान हों और साथ हों तो द्वित्व व्यञ्जन कहलाते हैं। **जैसे** –

क् + क = क्क	=	**पक्का।**
प् + प = प्प	=	**कुप्पा।**
ब् + ब = ब्ब	=	**डिब्बा।**

आगत वर्ण – कुछ ध्वनियाँ अन्य भाषाओं से आई हैं, इन्हें आगत वर्ण या ध्वनियाँ कहते हैं। **जैसे** –

फ़ (फ़कीर), ज़ (ज़ज्बा), ख़ (ख़ैर), ऑ (डॉक्टर) आदि।

(ग) मात्रा : वर्ण का उच्चारण करते हुए वर्ण–उच्चारण के समय का बोध हो उसे मात्रा कहते हैं। मात्राएँ स्वरों का ही स्वरूप हैं और सदा व्यञ्जनों के साथ मिली होती हैं।

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ
	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ

अ की कोई मात्रा नहीं होती परन्तु यह सभी व्यञ्जनों के साथ मिला रहता है।

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें।**

(क) वर्ण किसे कहते हैं? इसके कौन कौन से भेद हैं?

....

....

(ख) स्वर की परिभाषा बताइए।

....

(ग) स्वरों के भेद लिखिए।

....

(घ) व्यञ्जन किसे कहते हैं? ये कितने प्रकार के हैं?

....

(ङ) मात्रा किसे प्रकट करती है?

....

(च) चार आगत ध्वनियाँ लिखिए।

....

(छ) संयुक्त व्यञ्जन की क्या विशेषता है?

....

2. **वर्णमाला के निम्नलिखित वर्णों के वर्ग बताइए।**

वर्ण	वर्ग	वर्ण	वर्ग
(क) ज	....	(च) च	....
(ख) ठ	....	(छ) थ	....
(ग) ग	....	(ज) ख	....
(घ) ध	....	(झ) ण	....
(ङ) म	....	(ञ) न	....

3. **मूर्धन्य वर्ण लिखिए।**

....

4. रिक्त स्थान भरिए –

(क) क्का में ………….. व्यञ्जन है।

(ख) ज्ञ ………….. व्यञ्जन है।

(ग) ………….. स्वर की कोई मात्रा नहीं होती।

5. वर्णों को उनके वर्ग में भेजिए।

(क) ब	क वर्ग
(ख) द	च वर्ग
(ग) झ	ट वर्ग
(घ) घ	त वर्ग
(ङ) ड	प वर्ग

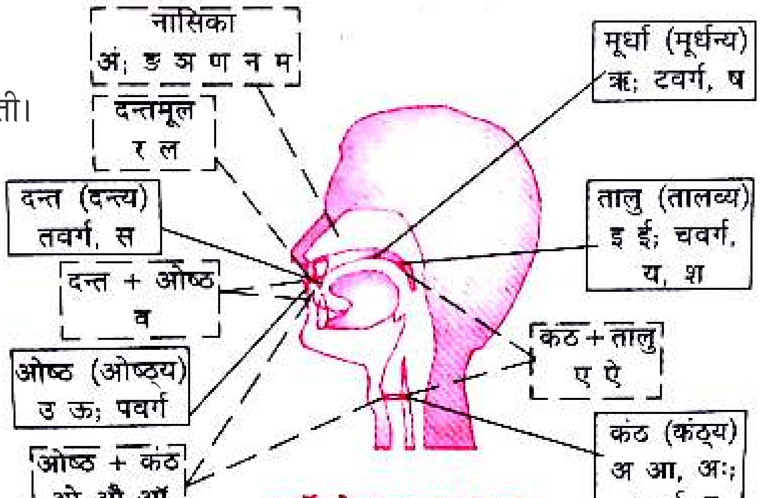

वर्णों के उच्चारण स्थान

हमने इस अध्याय में ह्रस्व व दीर्घ स्वर पढ़े। ह्रस्व का अर्थ 'छोटा' और दीर्घ का अर्थ बड़ा होता है। जैसे–

ह्रस्व		दीर्घ	
अ	अब	आ	आब
इ	मिल	ई	मील
उ	सुत	ऊ	सूत

आप सभी ऐसे ही ह्रस्व व दीर्घ स्वरों के आधार पर दस–दस शब्द एक चार्ट पर लिखकर अपने कक्षा–कक्ष में लगाएँ।

छात्रों के लिए करणीय

छोटे भैया–बहिन प्रायः अनेक प्रकार की ध्वनियाँ मुँह से निकालते हैं। इन्हें पहचान कर लिखें कि ये किस वर्ग की ध्वनियाँ हैं।

आचार्यों के लिए करणीय

आचार्य बंधु/भगिनी छात्रों को बलिदानी, वीर बालक–बालिकाओं की सूची बनवाएँ।